

## CHAPTER-XIII

### हुदहुद

#### 2 MARK QUESTIONS

##### 1. तुम्हारी समझ

(क) हुदहुद को कहीं 'हजामिन' चिड़िया और कहीं 'पदुबया' के नाम से पुकारते हैं। क्यों?

उत्तर:

हुदहुद की चोंच नाखून काटनेवाली 'नहरनी' से बहुत मिलती है। इसलिए कहीं-कहीं इसे 'जामिन' चिड़िया के नाम से भी पुकारते हैं। दूब में कीड़ा ढूँढ़ने के कारण हमारे देश में कहीं-कहीं इसे 'पदुबया' भी कहते हैं।

2. हुदहुद की चोंच पतली, लंबी और तीखी होती है। इस बात को ध्यान में रखकर बताओ

- वे कैसा भोजन खाते होंगे?
- चोंच से वे क्या-क्या काम ले सकते होंगे?

उत्तर:

- वे छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े खाते होंगे।
- चोंच से वे जमीन के भीतर छिपे कीड़े-मकोड़े ढूँढ़ निकालते होंगे। दुश्मनों से अपना बचाव भी वे इसी चोंच से करते होंगे।

**3. अगर तुम्हें हुदहुद को पहचानने में किसी की मदद करनी है तो तुम उसे कौन-सी बात बताओगे? चार-पाँच वाक्यों में लिखो।**

**उत्तर:**

हुदहुद के सिर पर कलगी होती है। इसका सारा शरीर रंग-बिरंगा और चटकीला होता है। पंख काले होते हैं जिन पर मोटी सफेद धारियाँ बनी होती हैं। इसकी चोंच पतली, लंबी और तीखी होती है। बोलते समय यह तीन बार 'हुप-हुप-हुप' सा कुछ कहता है।

## 4 MARK QUESTIONS

मैंने जाना

1. पाठ में ऐसे शब्दों की सूची बनाओ जो पक्षियों के लिए इस्तेमाल होते हैं।  
पाठ पढ़ने के बाद अपनी कॉपी में एक तालिका तैयार करें और उस तालिका में मालूम की गई जानकारी लिखो।

उत्तर-

जानती थी	पढ़कर मालूम हुआ	जानना चाहती हूँ	कैसे/कहाँ से पता लगाऊँगी
गिद्ध पंख (पर) चोंच दुम अंडे घोंसला	हुदहुद कलगी चोटी	किन- किन पक्षियों की कलगी होती है? किस पक्षी की दुम कैसी होती है? अंडे कैसे-कैसे होते	अध्यापिका से पूछकर और पुस्तकालय पता लगाऊँगी पक्षी-संग्रहालय से एवं पुस्तकालय से। उपर्युक्त तरीके से। हैं।

### 2. बातचीत

तुमने हुदहुद से जुड़ी एक कहानी पढ़ी है। उस कहानी को बातचीत के रूप में लिखो।

नीचे हमने इस बातचीत को तुम्हारे लिए शुरू कर दिया है-

शाह सुलेमान - अरे भाई गिद्ध! जरा मेरी बात तो सुनो।

गिद्ध (उड़ते-उड़ते) - कहिए, मगर जरा जल्दी से।

शाह सुलेमान - .....

गिद्ध - .....

तुम अपने दोस्तों के साथ बातचीत को कक्षा में नाटक के रूप में प्रस्तुत कर सकते हो।

उत्तर-

शाह सुलेमान -

मुझे गर्मी लग रही है। तुम अपने पंखों से मेरे सिर पर छाया कर दो।

गिद्ध - हम तो इतने छोटे हैं। हम छाया कैसे कर सकते हैं?

(गिद्ध उड़ते हुए आगे चले जाते हैं। हुदहुद का मुखिया उड़ता हुआ आता है।)

शाह सुलेमान - अरे भाई हुदहुद! जरा इधर तो आओ।

मुखिया हुदहुद - (उड़ता हुआ पास आकर) कहिए, महाराज! क्या बात है?

शाह सुलेमान - इस समय मैं तपती धूप से परेशान हो गया हूँ। क्या तुम मेरी कुछ मदद करोगे।

मुखिया हुदहुद - कुछ उपाय करता हूँ। आप थोड़ी देर इंतजार कीजिए।

(थोड़ी देर में बहुत सारे हुदहुद आकाश में उड़ते हुए आते हैं और बादशाह सुलेमान के सिर पर छाया कर देते हैं)

**शाह सुलेमान** – (खुश होकर) वाह! तुम सब ने तो कमाल कर दिया।

**मुखिया हुदहुद** – यह तो हमारा फर्ज था।

**शाह सुलेमान** – तुम सब कितने अच्छे हो। मैंने तो गिद्धों से भी मदद माँगी थी। उनके पंख भी बड़े – बड़े थे। वे चाहते तो मेरी मदद कर सकते थे पर उन्होंने मेरी मदद नहीं की।

**दूसरा हुदहुद** – उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। किसी की मदद करने में तो हमें खुशी होनी चाहिए।

**शाह सुलेमान** – (मुस्कुराते हुए) तुम गिद्धों से छोटे तो हो पर उनसे अधिक चतुर हो। तुम सबने मिलकर मेरी सहायता की है। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है?

**मुखिया** – महाराज मैं अपनी सभी साथियों से सलाह करने के बाद ही अपनी इच्छा बताऊँगा।

**शाह सुलेमान** – ठीक है।

(मुखिया हुदहुद अपने साथ कुछ बातें करता है।)

**शाह सुलेमान** – सलाह हो गई? वरदान माँग लो।

**मुखिया** – महाराज! आज से हमारे सिर पर कलंक सोने की कलगी निकल आए।

**शाह सुलेमान** – (हँसकर) मुखिया इसका फल क्या होगा यह तुमने सोच लिया है?

**मुखिया** – हाँ, महाराज! खूब विचार करके यह वर माँगा है।

**शाह सुलेमान** – ठीक है, ऐसा सही हो।

(सभी हुदहुद के सिर पर सोने की कलगी निकल आती है। सभी खुश हो कर चले जाते हैं।)

(कुछ दिन बाद..... महाराज के दरबार में हुदहुदों का मुखिया पहुँचता है।)

**मुखिया** – (घबराया हुआ) महाराज, हमारी रक्षा कीजिए।

**शाह सुलेमान** – क्यों क्या हुआ?

**मुखिया** – महाराज वरदान वापस ले लीजिए। जब से हमारे सिर पर सोने की कलगी निकल आई तब से लोग हमें ढूँढ़-ढूँढ़ कर मानने लगे हैं।

**शाह सुलेमान** – मैंने तो शुरू में ही तुम्हें चेतावनी दी थी। खैर, जाओ आज से तुम्हारे सिर का ताज सोने का नहीं बल्कि सुंदर परों का हुआ करेगा।

**मुखिया** – (खुश होकर) महाराज! आपका बहुत – बहुत धन्यवाद। (पर्दा गिरता है।)